अध्याय एक

कमलेश्वर और उनका कथा-साहित्य

1.1 व्यक्तित्व

व्यक्तित्व की अनुभूतियों का शाब्दिक अभिव्यक्ति ही साहित्य है। व्यक्ति की अनुभूति तो उसके संचित अनुभवों का ही निचोड़ है, ये वैविध्यपूर्ण अनुभव व्यक्ति को अपने ही परिवार, समाज और परिवेश से मिल जाते हैं। किसी भी व्यक्ति के निर्माण के मूल में ये ही सारे तत्व काम करते हैं, भले ही हर व्यक्ति के अनुभवों में विविधता रहती है। व्यक्तित्व व्यक्ति के संपूर्ण मानसिक और शारीरिक संगठन का नाम है, हर व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवेश का बड़ा हाथ रहता है।

एक अनुभवी कवि ने बहुत पहले कहा था, ''सच्ची बात चाहो तो कह लो, मीठी बात भी खुशी से बोला करो, लेकिन भूलकर भी कड़वी सच्चाई जाहिर न करो।'' आधुनिक हिन्दी कहानी के दो बहुत स्पष्ट दौर हैं- कमलेश्वर से पहले और कमलेश्वर के बाद। भाषा, प्रवाह, संवेदना की दृष्टि से कहानी में ज़बरदस्त परिवर्तन आया है। तूफानी गति से एक व्यक्ति कहानी के क्षेत्र में प्रकट हुआ, जिसे खोयी हुई दिशाओं की तलाश थी, और उसने अपनी इस तलाश से तथाकथित 'आधुनिक' को भी अतीत की चीज़ बना दिया। इस आदमी की जड़ें बहुत गहरी थीं, निगाह बहुत साफ़ थी, नैतिकता का ज़हर उसके खून में नहीं था और न ही उसे सतही सौंदर्यवादिता में

विश्वास था। वास्तव में एक व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में उसके परिवार विशिष्ट और समाज का योगदान महत्वपूर्ण है। कमलेश्वर के व्यक्तित्व निर्माण में भी इन सबों का समावेश देखा जा सकता हैं।

किसी भी लेखक की समीक्षा उसके साहित्य के समुचित ज्ञान के अभाव में संभव नहीं है। अल्पज्ञान के आधार पर किसी के संबंध में निश्चायत्मक ढंग से कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन इतिहास में ऐसे कई महान व्यक्ति हुए हैं जिन्हें उनके थोड़े से शब्दों के बल पर ही महानायकत्व पद प्राप्त हुआ। कमलेश्वर एक ऐसे रचनाकार हैं, जिन्हें अपनी अनूठी रचनाओं के जरिए हिन्दी साहित्यकारों में इन्द्रधनुषी छवि हासिल हुई। मुश्किल लहज़े में बात करना आसान है लेकिन आसान लहज़े में गंभीर और मुश्किल बात करना मुश्किल है। कमलेश्वर ने अपनी लेखनी के माध्यम से इस मसले का बखूबी हल किया है। वे ऐसे रचनाकार हैं कि समाज के लिए अनवरत साहित्य सृजन करने के उद्देश्य से कठिन परिस्थितियों में विप्र गोस्वामी, संजय, हरिशचंद्र, सौमित्र सिन्हा तथा पर्यवेक्षक उपनामों से रचनाएँ करते रहे।

हिन्दी रचनाधर्मिता के क्षेत्र में कमलेश्वर का स्थान शीर्ष पर है। अपने प्रारंभिक काल से ही, जब से उन्होंने लेखन में हस्तक्षेप किया, अपनी लेखनी को धारदार बनाए रखा। अभावों की ज़िन्दगी में भी वे मस्त रहे। इसलिए साधन और सम्मान की स्थिति में भी उन्हें तख्त और तख्तें में कोई अन्तर दिखाई नहीं देता। यहाँ तक कि उपभोग की अवस्था में भी ये दोनों स्थितियाँ उन्हें समान आनन्द प्रदान करती है।

1.1.1 जन्म तथा परिवार

कमलेश्वरजी का जन्म सन् 6 जनवरी 1932 ई. को उत्तरप्रदेश के मैनपुरी में हुआ। आलोचकों का कथन है कि ''यदाकदा अपनी रचनाओं में मैनपुरी का नामोल्लेख करके उसे यथार्थ और विश्वास के योग्य बनाने की कोशिश करते हैं कमलेश्वर।''[1] उनका परिवार प्राचीन सांमती थी। कमलेश्वर के पिता का नाम जगदंबा प्रसाद था। जब वे बहुत छोटे थे, तभी पिता की मृत्यु हुई। उनके पिता ने दो विवाह किये थे। कमलेश्वर उनकी दूसरी पत्नी शान्तिदेवी का सबसे छोटा लड़का है। कमलेश्वर की कोई बहन नहीं है, उनके सबसे बड़े भाई रामेश्वर प्रसाद बहुत पहले ही भविष्य की तलाश में घर छोड़कर इलाहबाद में बस गए थे। उनके दूसरे भाई का नाम सिद्धार्थ है। सिद्धार्थ के साथ कमलेश्वरजी का अच्छा रिश्ता था। वह बड़ा ही होशियार था। परिवार का भविष्य उस पर निर्भर था, लेकिन नियति को कोई नहीं रोक सकता। सिद्धार्थ की अचानक मृत्यु हो गई। इस दुर्घटना ने घरवालों के सपनों को अधूरा बना दिया, विशेषकर कमलेश्वर के।

घर के अभावों ने उस बालक को काफी जिम्मेदार बना दिया। बड़ों के सम्मान निर्णय लेने की क्षमता बचपन में ही उनको प्राप्त हुई। वे स्वयं कहते है, ''एक अमीर कहे जाने वाले घर में गरीब की तरह रहना... खाना खाकर भी भूखा उठना, अकुलाहट और दुखों के बीच भी हँस सकना, बच्चा होते हुए भी वयस्कों की तरह

निर्णय ले सकना, वह मेरी आदत नहीं, मज़बूरी थी।''[2] बचपन में पिता एवं भाई की मृत्यु ने उन्हें नितांत अकेला बना दिया। उनकी माँ बहुत हिम्मत रखती थी। मेहनत व संघर्ष करके उन्होंने परिवार का भरण-पोषण किया। कमलेश्वर अपनी माँ की तरह जीवन की हर कठिनाइयों को झेलने के आदी थे।

1.1.2 शिक्षा

कमलेश्वर की हाईस्कूली शिक्षा गवर्नमेंट हाइस्कूल मैनपुरी में हुई। इलाहबाद के के. पी. इंटर कालेज से सन् 1950 ई. को इंटरमीडियट की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए तथा इलाहबाद विश्वविद्यालय से सन् 1954 ई. को एम. ए. की उपाधि भी उन्होंने प्राप्त की। उन्होंने भौतिकी, रसायनशास्त्र, गणित, अर्थ-शास्त्र, भूगोल आदि विषयों पर गहरा अध्ययन किया। छात्रावस्था में ही उनकी प्रतिभा निखर आने लगी थी। इसके बाद पी.एच.डी करना चाहा लेकिन अनुकूल अवसर न पाने पर उसे बीच में छोड़ दिया।

कमलेश्वर ने बचपन से ही अभावों का सामना किया था। वे एक निर्धन परिवार के सदस्य थे। छोटी आयु में ही पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ उनके कंधों पर आ पड़ा। पढ़ाई के दिनों में भी निर्धनता के कारण वे कोई नयी किताब खरीद न पा रहे थे । जब उनके साथ के लड़के नयी-नयी किताब और कापियां खरीदते थे तब उनकी आँखों में आँसू भर जाते थे। बीमारी के अवसर पर या कोई चोट लगते समय

दर्द से कराहकर अकेले वे अस्पताल जाते थे। पढ़ने के लिए मिट्टी का तेल नहीं होता तो म्युनिसपेलिटी की लालटेनों से तेल चुराते थे। ये सब यातनायें भोगते थे।

कठिनइयों से गुज़रने पर भी कमलेश्वर ज़्यादातर क्लास में प्रथम आया करते थे। फीस के लिए उन्हें बहुत बेइज्जत भी किया जाता था। इस संबन्ध में कमलेश्वर के मित्र एवं सहपाठी दुष्यंत कुमार का कथन है-- ''क्योंकि जेब खर्च नाम की कोई चीज़ उसके पास न होती थी, इसलिए फीस के रूपये में से कुछ न कुछ वह हमेशा खर्च कर लेता था और वक्त पर उसके पास पूरे पैसे नहीं होते थे।''[3] उन दिनों वे खर्च चलाने के लिए पढ़ने के बाद एक पत्रिका के कार्यालय में काम भी करते थे।

1.1.3 विवाह

सन् 1958 ई.में कमलेश्वर की शादी गायत्री से हुई। कमलेश्वर की पहली पुत्री का निधन जन्म से कुछ समय के बाद हो गया था। अत्यंत खेद की बात है कि वे अर्थ के अभाव के कारण ही अपनी पहली बच्ची को न देख सके। अपनी पहली बच्ची को न देख पाने के दुःख ने उनके सारे जीवन सूत्रों को तोड़ डाला। अब उनके एक बेटी है, जिसका नाम 'ममता' है। गायत्री एक जानी मानी लेखिका है। अब वे साहित्य सृजन में रत है। ममता अध्यापिका है।

1.1.4 नौकरी

आर्थिक अभाव कमलेश्वर को खूब सताता रहा। उससे मुक्ति पाने केलिए उन्होंने इलाहबाद के 'बहार मासिका' में संपादन का कार्य किया। इस के लिए उन्हें

पचास रूपये माहवार मिलते थे। इसके कुछ वर्षों बाद वे 'राजकमल प्रकाशन' में काम करने लगे। फिर कमलेश्वर ने सेन्ट जोसेफ्स सेमिनारि में हिन्दी अध्यापक का कार्य किया जहाँ माहवार एक सौ पच्चीस रुपये मिलते थे। उन्होंने 'श्रमजीवी' नामक एक संस्था भी शुरू की।

कमलेश्वर ने 'आल इंडिया रेड़ियो' पर स्क्रिप्ट राइटर के रूप में भी काम किया है। वहाँ से उन्हें माहवार दो सौ पचहत्तर रुपये मिलते थे। दूरदर्शन में भी उन्होंने स्क्रिप्ट लेखक का कार्य किया है। नाटक, अनुवाद, समाचार आदि लिखने का कार्य कमलेश्वर को ही करना पड़ता था। इस तरह आल इंडिया रेडियो का काम कमलेश्वर केलिए वरदान सिद्ध हुआ। उन्होंने स्वयं लिखा है- ''वह एक मनमाँगी मुराद थी, क्योंकि मेरी आर्थिक स्थिति बहुत नाजुक थी।''[4] भारतीय दूरदर्शन केलिए पहली फिल्म 'अगस्त पन्द्रह' का निर्माण कमलेश्वर ने ही किया था। कमलेश्वर के जीवनानुभवों ने उन्हें ढृढ़संकल्पी बना दिया। 'जार्ज पंचम की नाक' नामक सरकारी विरोधी कहानी लिखने के कारण सन् 1961 में उन्होंने दूरदर्शन की नौकरी छोड़ दी। पैसे के अभाव के कारण उन दिनों खाना भी दिन में एक बार ही खाया करते थे। फिर भी वे अपने आदर्शों एवं सिद्धांतों में अडिग रहे। सन् 1967 मार्च से लेकर वे 'सारिका' के संपादक रहे। एक 'साहित्यिक कार्यक्रम' नामक पत्रिका भी उन्होंने निकाली थी।

कमलेश्वर अत्यंत प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। उनका ढृढ़ संकल्प, आदर्शवादिता, सैद्धांतिकता, ज्ञान एवं प्रभावी व्यक्तित्व के कारण ही श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने उन्हें स्वयं

बुलाकर दूरदर्शन का डाइरेक्टर जनरल जैसा उच्च पद प्रदान किया। 1980 से 1984 तक उन्होंने इस पद का कार्यभार संभाला।

कमलेश्वर के व्यक्तित्व में शील, संकोच, विनय आदि गुणों की मात्रा अधिक है। सबसे स्नेहपूर्ण व्यवहार करने वाले तथा औरों के प्रति मन में द्वेष न रखने वाले ऐसे महान व्यक्ति ढूँढने पर भी कम मिलते हैं। उनके बाह्य व्यक्तित्व में कुछ भी ऐसा नहीं है जो कि उन्हें असाधारण सिद्ध कर सके। नाना प्रकार के अनुभवों से वे संपन्न थे। विरासत में मिले दर्द ने इन्हीं अनुभवों को अनुभूति में परिणत किया। इन सब का प्रभाव इनकी कृतियों में पाया जाता है। बचपन से ही कमलेश्वर संकोची स्वभाव के थे। अपनी माँ से भी रोटी माँगने से वे हिचकते थे। कमलेश्वर के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए दुष्यन्तकुमार ने लिखा है- ''जिस ज़माने में उसने लिखना शुरू किया था और जिस संघर्ष से वह निकलकर आया था, उसने कमलेश्वर को नितान्त अन्तर्मुखी बना दिया था।''[5] निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कमलेश्वर की सृजन-प्रक्रिया में उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप पड़ी है। अंत में 27 जनवरी, 2007 रात में उनका निधन हो गया।

1.2 कृतित्व

कमलेश्वर प्रतिभा-संपन्न साहित्यकार है। उन्होंने जीवन के सुख-दुखों के विविध अनुभवों और गहन चिन्तन-मनन के द्वारा अपनी प्रतिभा को खूब निखारा था। वे परिस्थितियों एवं समस्याओं के बीच से गुजरकर, भोगे हुए जीवन के यथार्थ को

ईमानदारी से शब्दबद्ध कर रहे थे। उनके मत में ''साहित्य चमत्कार नही है ... साहित्य किसी भी लेखक की रचनात्मक पीडा और उसके दौर की मिली-जुली यातना का दस्तावेज है।''[6] वस्तुतः कमलेश्वर ने अपने निकट के लोगों की जिन्दगी को अपने साहित्य का कथ्य बनाया है।

कमलेश्वरजी की रचना-प्रक्रिया के संबंध में डॉ. उषा चौहान ने लिखा है - ''कमलेश्वर केलिए रचनाएँ मूलतः असहमति का माध्यम है। बचपन में उन्होंने अपने कस्बे और शहर के आसपास के लोगों की ज़िन्दगी को देखा समझा। वे अपने पूरे परिवेश और पूरी परिस्थिति के प्रति एक कसमसाहट और आकुलता अनुभव करते थे, कमलेश्वर के मन में सवाल उठते थे, शंकायें उठती थी। अपने इस ठहरे हुए यथास्थिति परिवेश के प्रति उनके मन में एक तीव्र प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने कलम का सहारा लिया यानी लेखक बने।''[7]

विद्यार्थी जीवन में ही राजनीति के प्रति कमलेश्वर की रूचि रही थी, दसवीं कक्षा पास होते ही उनका संपर्क क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी से हो गया। वे मार्क्सवाद की 'सक्रिय' पाठशाला में शामिल हो गये और 'जनक्रांति' नामक अखबार में शहीदों के जीवन पर लेख लिखने लगे। यही उनका प्रारंभिक लेखन था जिससे उन्हें आगे लिखने की प्रेरणा मिली। उन्होंने हर लेख में अपना निर्णय जोड़ दिया याने उनकी रचनायें निर्णयों का पर्याय बनती गई। अपनी रचनाओं के संबन्ध में उनका मत है-

''मेरे लिए कहानियाँ समय की धुरी पर घूमती सामान्य सच्चाइयों के प्रति और पक्ष में किए गए निर्णयों की कहानियाँ हैं।''[8]

कमलेश्वर ने अपने आस-पास के माहौल यानि अपने कस्बे मैनपुरी से प्रेरणा ग्रहण की। वहाँ के मोहक वातावरण से उनकी अनुभूतियाँ रँग गई। कमलेश्वर ने लेखन के लिए विषय-वस्तु सीधे जन-जीवन के अनुभवों से ली है। उनके लिए रचना और व्यक्तित्व का रिश्ता बड़ा ही अंतरंग है। अतः उनकी रचनाओं में हल संश्लिष्ट चरित्रों का चित्रण देख सकते हैं।

कमलेश्वर लेखन को परीक्षा मानते हैं। उनके मत में ''यह कठिन परीक्षा का समय होता है और मैं कागज़ सामने रखकर उससे कतराने की कोशिश करता रहता हूँ। तमाम तकलीफें मुझे उसी वक्त सताती हैं और भागता रहता हूँ। यह भागना तब तक चलता रहता है, जब तक अनुभव अनुभूति में आत्मसात नहीं हो जाता। उसके बाद लिखना मेरी मुक्ति का प्रयास बन जाता है, बिना लिखे फिर मुक्ति नहीं मिलती।''[9] कमलेश्वर को कहानी लेखन एक चुनौती ही है। लेखन के अन्त में उन्हें मुक्ति का एहसास होता है।

कमलेश्वर ग्रामीण आवासीय भूगोल, आर्थिक भूगोल, ऐतिहसिक-राजनैतिक भुगोल, औद्योगिक, यातायात भूगोल, क्षेत्रीय नियोजन से विचरते हुए भूगोलदेवता नहीं बने अपितु अपनी सर्जनशीलता के माध्यम से उन्होंने अध्येताओं को 'कितने पाकिस्तान' जैसी रचना प्रस्तुत की। वे समाज में कुलीन वर्ग को टटोलते हैं,

साधनहीनता के बीच जीते हैं। संस्कृति से संस्कारों का आबंटन करते हैं और धर्म से जीवनशैली को रूपायित करते हैं। अपने शिल्प के सहारे जब वे अपनी अनुभूतियों को सटीक कल्पनाओं के साथ रचना में वास्तविकता की अनुकृति उतारते हैं, तब उनका कौशल अभिव्यक्ति की शक्ल में पाठक के सामने आता है।

युगबोध और युगसत्य को कमलेश्वर ने सदैव प्राथमिकता दी है। राजेन्द्र यादव के मतानुसार-- ''कमलेश्वर अपना सच नहीं बोल सकता, मगर अपने युग और अपनी पीढ़ी का सच वह जरूर बोल सकता है। उसके पास ज़बान है और उसे बात करनी भी आती है, क्योंकि इसी समय सच पर आकर बड़े-बड़े ईमानदार लोग चुप हो जाते हैं।''[10] कमलेश्वर अन्याय, अत्याचार, शोषण और किसी भी तरह के प्रतिवाद के विरुद्ध पहली आवाज़ उठाने वाले रचनाकार थे। चाहे वह इस अनंत पृथ्वी के किसी भी कोने से क्यों न रहा हो।

कमलेश्वर ने साधारण जन की तकलीफों और उनके सपनों को ही अपने लेखन के माध्यम से रूपयित किया है। आम आदमी ही हमेशा उनका विषय रहा है। लिखने के लिए कमलेश्वर को चार्ट बनाने, कठोर परिश्रम करने या गहरे सोच-विचार में पड़ने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि वे अनायास ही कथ्य को मूर्त करते जाते हैं। कमलेश्वर लेखन को परिश्रम मानते हैं। कमलेश्वर ने अपनी रचनाओं में सामान्य मनुष्य के दुःख, दर्द, आकांक्षाओं, संघर्षों और मज़बूरियों को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया है । कमलेश्वर बहुमुखी प्रतिभावाले साहित्यकार हैं। साहित्य के विभिन्न

क्षेत्रों में उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है। कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना आदि सभी विधाओं को उन्होंने अपनाया है। इसके अलावा वे बाल साहित्य के लेखक थे, टी.वी. के लिए लिखते और कार्यक्रम प्रस्तुत करते थे, फिल्मों के पटकथाकार और संवाद लेखक थे और संपादन जैसे कठिन कार्य में भी उन्होंने सफलता हासिल की है।

1.2.1 कहानीकार कमलेश्वर

कमलेश्वर स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। वे उपन्यास की अपेक्षा कहानी में अधिक प्रभावी सिद्ध हुए हैं। कहानी के संबन्ध में कमलेश्वर का वक्तव्य है-- ''कहानी एक ऐसी विधा है, जो बड़ी सहजता और आडंबरहीनता से अपने समय की भावनात्मक और विचारात्मक विविधता को प्रस्तुत करती चलती है।''[11] आम आदमी का दुःख, दर्द, अभाव, संघर्ष तथा मजबूरी को पकड़ने का प्रयत्न इनकी कहानियों में दिखाई देता है। हिन्दी की 'नई कहानी' के रचनाकारों में कमलेश्वर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में समर्थ हुए हैं।

कमलेश्वर की कहानी साहित्य के तीन दौर हैं। उनकी कहानियों का पहला दौर सन् 1952 से शुरु होकर सन् 1958 समाप्त हो जाता है। उनकी पहली कहानी 'कामरेड' है जो एप्टा से निकली 'अप्सरा' पत्रिका में प्रकाशित हुई। उनकी पहली दौर की कहानियाँ हैं- 'सींखचे', 'मुर्दों का टीला', 'आत्मा का आवाज़', 'अकाल', 'राजा निरबंसिया', 'देवा की माँ', 'भटके हुए लोग', 'कस्बे का आदमी', 'गर्मियों के दिन',

'एक अश्लील कहानी', 'पीला गुलाब' आदि। इस दौर में उन्होंने मनुष्य के छल को, निरन्तर परिवर्तन होनेवाली निर्णय प्रक्रिया को, टूटते जीवन मूल्यों को, परिवेश की भयावहता को अभिव्यक्त किया है।

कमलेश्वर की कहानियों का दूसरा दौर सन् 1959 में शुरू हो जाता है और सन् 1966 में समाप्त। कस्बों को छोडकर कमलेश्वर सन् 1959 में दिल्ली आये, अतः उस दौर में उन्होंने शहरी जीवन को प्रस्तुत किया है। इसने उनकी रचना को नई दिशा दी और लेखन में उन्हें नई ज़मीन मिली। इस दौर की कहानियों में व्यक्ति के दारूण तथा विसंग संदर्भों के समय के परिप्रेक्ष्य में समझने की कहानियाँ हैं। इस दौर की कहानियों में 'जार्ज़ पंचम की नाक', 'खोई हुई दिशाएँ', 'दिल्ली में एक मौत', 'पराया शहर', 'तलाश', 'दुःख भरी दुनिया', 'माँस का दरिया' आदि हैं। शहरी जीवन की विशिष्टता तथा परिवर्तन को लेखक ने सशक्तता के साथ अभिव्यक्त किया है।

सन् 1966 से लिखी गयी कहानियाँ तीसरे दौर में आती है। सन् 1966 में कमलेश्वर मुंबई गये। महानगरीय सभ्यता और संस्कृति को जान लेने का अवसर इस दौर से ही उन्हें प्राप्त हुआ है। इस दौर की कहानियाँ पूर्णतः जिन्दगी से जूडी हुई हैं। इस दौर की प्रमुख कहानियाँ हैं- 'या कुछ और', 'नागमणि', 'लड़ाई', 'बयान', 'जोखिम', 'रातें', 'लाश', 'मैं', 'अपना एकांत', 'उस रात वह मुझे ब्रीचकैण्डी में मिली थी' आदि हैं।

कमलेश्वर के कहानी लेखन का यह लम्बा सफर इन तीन दौरों से होकर जीवन के अंतिम क्षणों तक अनवरत अग्रसर हुआ। कमलेश्वर के प्रकाशित कहानी संग्रह हैं--

1. 'राजा निरबंसिया' (सन् 1956)

2. 'कस्बे का आदमी' (सन् 1958)

3. 'खोयी हुई दिशाएँ' (सन् 1963)

4. 'मांस का दरिया' (सन् 1963-64)

5. 'जिन्दा मुर्दे' (सन् 1969)

6. 'मेरी प्रिय कहानियाँ' (सन् 1972)

7. 'इतने अच्छे दिन' (सन् 1989)

8. 'कथा प्रस्थान' (सन् 1992)

9. 'रावल की रेल' (सन् 1992)

10. 'कोहरा' (सन् 1994)

11. 'परिक्रमा' (सन् 1996)

12. 'महफिल' (सन् 2000)

पहले 'राजा निरबंसिया' और 'कस्बे का आदमी' ये दोनों अलग-अलग संग्रह थे। फिर दोनों को मिलाकर एक कर दिया। कमलेश्वर की समस्त कहानियाँ

'समग्र कहानियाँ' (2001) नाम से प्रकाशित हुई हैं। इस प्रकार एक कहानीकार के रूप में कमलेश्वर की पहचना हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठित हुई।

1.2.2 उपन्यासकार कमलेश्वर

कहानियों के समान ही कमलेश्वर ने उपन्यास साहित्य की समृद्धि में भी अपना उल्लेखनीय योगदान दिया है। उस क्षेत्र में भी उन्होंने शीर्षस्थ स्थान पा लिया है। उनके तेरह उपन्यास प्रकाशित हो चुके है - 'एक सडक सत्तावन गलियाँ' (सन् 1956), 'डाक बंगला' (सन् 1959), 'तीसरा आदमी' (सन् 1960), 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' (सन् 1962), 'लौटे हुए मुसाफिर' (सन् 1961), 'काली आँधी' (सन् 1967), 'आगामी अतीत' (सन् 1969), 'वही बात' (सन् 1973), 'सुबह दोपहर शाम' (सन् 1987), 'रेगित्सान' (सन् 1988), 'कितने पाकिस्तान' (सन् 2000), 'अनबीता व्यतीत' तथा 'एक और चन्द्रकान्ता' (भाग-1, भाग-2) (सन् 2007)। इसमें प्रथम पाँच उपन्यास ''कमलेश्वर की जीवन यात्रा के दिल्ली प्रवास काल तक के उपन्यास है।''[12] 'एक सडक सत्तावन गलियाँ', 'डाक बंगला', 'काली आँधी' और 'आगामी अतीत' आदि उपन्यासों पर फिल्में भी बन चुकी है।

1.2.2.1 'एक सडक सत्तावन गलियाँ'

कमलेश्वर का पहला उपन्यास है 'एक सडक सत्तावन गलियाँ' । यह उपन्यास 'बदनामगली' नाम से भी छपा है। कमलेश्वर को एक उपन्यासकार के रूप में

प्रतिष्ठित करने का श्रेय इस उपन्यास को है। इस उपन्यास में पात्रों की भरमार है और सभी पात्रों को पूरी जानकारी भी कमलेश्वर ने दी है। स्वातंत्र्योत्तर पूर्व की कस्बाई जिन्दगी का बडा ही सघन एवं संवेदनात्मकता का मार्मिक चित्रण इसमें प्रस्तुत किया है। 'सरनाम सिंह', 'रंगीले', 'बंसिरी', 'शिवराज', 'बाजा मास्टर', 'कमला' आदि इनके प्रमुख पात्र है। 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' में निम्न मध्यवर्गीय समाज के आर्थिक, सामाजिक एवं वैयक्तिक जीवन का सजीव चित्र है। लेखक ने अपने प्रगाढ़ अनुभव और संवेदनाजन्य अनुभूतियों के आधार पर इसकी कथा लिखी है।

1.2.2.2 'ड़ाक बंगला'

'ड़ाक बंगला' कमलेश्वर का दूसरा उपन्यास है, जिसकी कथा कुछ अयथार्थ सी लगती है। इसमें 'इरा' नामक एक असाधारण स्त्री के माध्यम से एक साधारण नारी की नियति और उसके आंतरिक एवं बाह्य संघर्षों को अभिव्यक्त किया गया है। इरा विधवा युवती है, वह ड़ाक बंगले में ठहरी हुई है, उसने अपनी टूटी हुई ज़िन्दगी की अनुभूतियों को अनेक संकेतों और बिम्बों द्वारा अभिव्यक्त किया है। इरा ने जीवन में 'विमल', 'बतरा', 'सोलंकी' और 'डॉक्टर' चार पुरुषों से प्रेम किया है, लेकिन किसी ने भी उससे ईमानदारी नहीं दिखायी।

1.2.2.3 'तीसरा आदमी'

'तीसरा आदमी' एक सरल उपन्यास है । इसमें किसी भी प्रकार की कृत्रिमता का सहारा नहीं लिया गया है। यह उपन्यास प्रथम पुरुष में लिखा गया है। इसमें

कमलेश्वर ने मध्यवर्गीय परिवार के दाम्पत्य जीवन का चित्रण अंकित किया है। 'नरेश', 'चित्रा', 'सुमन्त' आदि इसके प्रमुख पात्र हैं। यह उपन्यास मध्यवर्गीय परिवार के संस्कारों, कुंठाओं तथा आर्थिक-विषमताओं का दस्तावेज है। यह आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है।

1.2.2.4 'समुद्र में खोया हुआ आदमी'

यह एक सशक्त सार्थक और महत्वपूर्ण अपन्यास है। यह उपन्यास भी मध्यवर्गीय संस्कारों कुंठाओं और जडताओं को अभिव्यक्त करता है। यह एक प्रतीकात्मक उपन्यास है। इस उपन्यास में निम्नमध्यवर्गीय समाज और उसके चरित्रों का बारीकी से वर्णन हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में महानागरीय परिवेश में व्यक्ति संबधों की खींझ, अकेलापन, तिलमिलाहट, हीनताबोध, व्यक्ति-स्वातंत्र्य आदि का यथार्थ चित्रण किया है। उपन्यास कला की दृष्टि से भी यह उपन्यास कमलेश्वर की प्रमुख कृतियों में एक है।

1.2.2.5 'लौटे हुए मुसाफिर'

'लौटे हुए मुसाफिर' में भी 'एक सडक सत्तावन गलियों' की तरह शहर और कस्बे की ज़िन्दगी को मूर्त किया गया है। देश विभाजन की विभीषिका को उजागर करनेवाला एक सशक्त उपन्यास है यह। कमलेश्वर ने प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा निम्नवर्ग और छोटे शहर की जिन्दगी की ओर दृष्टिपात किया है। इस उपन्यास में आस्था,

आत्मविश्वास, कर्तव्यपरायणता, देशानुराग एवं दायित्व निर्वाह का जो महान सन्देश उन्होंने दिया है, वह आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

1.2.2.6 'काली-आँधी'

'काली-आँधी' मुख्य रूप से एक असफल दांपत्य जीवन की करुण कहानी है। मालती और जग्गीबाबू आजकल की पूँजीवादी व्यवस्था के प्रतीक हैं। नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है तथा भ्रष्टाचार पनपा है। जग्गी बाबू और मालती पति-पत्नी है। मालती इस पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतीक है जो हित और स्वार्थ केलिए आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्ग का शोषण करती है।

1.2.2.7 'आगामी अतीत'

'आगामी अतीत' भी दो-तीन व्यक्तियों के असफल संबंधों की कहानी है। इसमें एक जीवन्त नारी पात्र चाँदनी को प्रस्तुत किया है। 'कमलबोस', 'प्रशान्त', 'चन्दा', 'चाँदनी' आदि इस उपन्यास के प्रमुख पात्र है। आज की सामन्तवादी और पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था को गलत और घातक तकनीकों को सफलता कैसे मिलती है, इसका चित्रण 'आगमी अतीत' में प्रस्तुत किया है।

1.2.2.8 'वही बात'

'वही बात' में 'प्रशान्त' नामक एक इंजनीयर के वैवाहिक जीवन को प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं 'प्रशान्त', 'नकुल', 'समीरा', 'टोमी'

नामक कुत्ता। चीफ इंजनीयर प्रशान्त केलिए केरियर महत्वपूर्ण है। इस कारण प्रशान्त और समीरा के दाम्पत्य जीवन में दरारें आ जाती है। अन्त में तलाक हो जाता है। ज़िन्दगी को रोमान्टिकता से बाहर निकालकर यथार्थ के धरातल पर खड़ा करना इस उपन्यास की विशेषता है। डॉ. विवेकी राय के शब्दों में ''प्रस्तुत उपन्यास नारी के संदर्भ में काम को और पुरुष के संदर्भ में अर्थ को नयी विचारोत्तेजक स्थितियों में प्रस्तुत करता है।''[13]

1.2.2.9 'रेगिस्तान'

'रेगिस्तान' में अज़ादी के सपने पूरे न होने की मार्मिक व्यथा है। विश्वनाथ के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के जीवन और बलिदान को प्रस्तुत किया गया है। गाँधीजी राष्ट्रभाषा हिन्दी को देश के चारों और फैलाना चाहते हैं। उनकी मृत्यु के बाद इस आदर्श को कायम करने केलिए विश्वनाथ निरन्तर कर्मरत है। अन्त में उनका सारा परिश्रम विफल हो गया क्योंकि भारतीय जनता अंग्रेज़ी सीखना पसन्द करते हैं।

1.2.2.10 'सुबह दोपहर शाम'

'सुबह दोपहर शाम' की बड़ी दादी कमलेश्वर की अद्भूत सृष्टि है। स्वतंत्रता आन्दोलन के आधार पर लिखा गया इस उपन्यास में 'शान्ता' नामक एक आदर्श भारतीय नारी का चित्रण प्रस्तुत किया है। 'प्रवीन', 'नवीन', 'मंजू', 'बड़ी दादी'

आदि इसके प्रमुख पात्र है। डॉ. विवेकीराय के शब्दों में - ''इसकी सब से बड़ी विशेषता यह है कि समस्त उपन्यास में प्रभावशाली व्यक्तित्व चित्रों में उभर गया है।''[14]

1.2.2.11 'कितने पाकिस्तान'

कमलेश्वर का यह उपन्यास मानवता के दरवाज़े पर इतिहास और समय की एक दस्तक है। भारत के वर्तमान इतिहास में हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष, पाकिस्तान के रूप में देश में देश का विभाजन आदि घटनाओं को भी उन्होंने इस में विस्तार से लिया है। इतिहास के अंदर धँसकर लिखी गयी यह रचना अंतर्राष्ट्रीय फलक को समेटती है। इस आनेवाली पीढियों को लेखक की चेतावनी है कि और कितने पाकिस्तान बनेंगे और कितने निर्दोष खून बहाएँगे?

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कमलेश्वर के उपन्यासों में आधुनिक जीवन की विसंगतियों और विडंबनाओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। इनमें मानवीय संबंधों को पूरी संवेदना और मार्मिकता के साथ व्यंजित किया गया है।

1.2.3 संपादक कमलेश्वर

इतिहास के घटनाक्रमों से प्रताड़ित बुद्धिजीवियों के द्वारा चेतना को जाग्रत करने के समसामयिक प्रयासों ने हिन्दी पत्रकारिता को जन्म दिया। समाज सुधारकों, धार्मिक आंदोलनकारियों, प्रखर नेतृत्व प्राप्त व्यक्तियों एवं सजग पत्रकारों ने इसके विकास में सहयोग दिया। विचारों और सवालों तथा जूझने के साहस ने जिस

पत्रकारिता को जन्म दिया उसके सफल सिपाही रहे थे कमलेश्वर। एक व्यक्ति जो स्थापित लेखक हो वही संपादक का कार्य भी सँभाले तो वही पत्रकारिता की सफलता के लक्षण होते हैं।

सम्पादक के रूप में कमलेश्वर ने सबसे पहले हिन्दी 'संकेत' में काम किया था। सन् 1954 ई, में इलाहाबाद से 'कहानी' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। कमलेश्वर आरम्भ से उसके सहयोगी सम्पादक रहे। वे उसमें समाजवादी देशों की कहानियों का अनुवाद भी करते रहे। फिर उन्होंने दिल्ली से निकलने वाले साप्ताहिक पत्र 'इंगित' के सम्पादक का भार ले लिया। 'इंगित' साहित्यिक पत्र मात्र न होने के कारण इसमें तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयों पर सार्थक टिप्पणियाँ और लेख कमलेश्वर ने लिखे हैं। कमलेश्वर ने 'पर्यवेक्षक', 'संजय', 'हरिशचन्द्र', 'सौमित्र सिन्हा', 'विप्र गोस्वामी' आदि उपनामों से तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक विषयों पर टिप्पणियाँ और लेख लिखकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। 'इंगित' छोड़ने के पहले भी कमलेश्वर ने 'नई कहानियाँ' साहित्यिक पत्रिका के द्वारा उन्हें साहित्यिक समस्याओं को उजागर करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसमें उन्होंने प्रगतिशील रचनात्मकता को रेखांकित करते हुए सभी समकालीन कथाकारों का परिचय दिया था। साथ ही उन्होंने नए कथाकारों को प्रश्रय दिया तथा उनकी वैचारिक समस्याओं को अभिव्यक्त किया। ''कमलेश्वर को समसामयिक

परिवर्तनकामी चेतना को विकसित करने वाले संपादकों की पंक्ति में पाया जाता है। यही चेतना तो भारतीय पत्रकारिता की आधारवस्तु है।''[15]

उन्होंने 'मेरा हमदम मेरा दोस्त' नाम से नए लेखकों के जीवन के अंतरंग प्रसंगों को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। कमलेश्वर ने नई धारा के समकालीन कहानी विशेषांक में नए-पुराने सभी लेखकों को जुटाया। इसमें कहानियों के अतिरक्ति आधुनिक संक्रमण और लेखक दृष्टि 'कहानी-परिचर्चा' के अन्तर्गत अनेक लेखकों ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। इस विशेषांक का संपादन खुद कमलेश्वर ने ही किया था। यहीं से कमलेश्वर के साहित्यिक सम्पादक का व्यक्तित्व निखर उठने लगा।

कमलेश्वर ने सन् 1967 ई में 'सारिका' का सम्पादन कार्य सम्भाला। इसमें 'मेरा पन्ना' नाम से उन्होंने संपादकीय वक्तव्य लिखना आरम्भ किया। इनके संपादकीय टिप्पणियों में आम आदमी का एक सही चित्र उभर कर सामने आया। इसके सहारे कमलेश्वर ने आम आदमी को उसकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के बीच, खड़ा कर दिया अर्थात् आम आदमी के जीवन को सभी आंकड़ों में जाना-समझा और अभिव्यक्ति भी किया। उनके इस प्रयास ने अनेक लेखकों को आपस में मिलाया। 'परिक्रमा' के अन्तर्गत उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का पुनर्मूल्यांकन एवं हर महीने प्रकाशित होने वाली कहानियों का मूल्यांकन भी किया। इसके अतिरिक्त कमलेश्वर ने छोटी-छोटी पत्रिकाओं में 'बातचीत' कॉलम भी आरम्भ किया, क्योंकि साहित्य निर्माण में लघु-पत्रिकाओं का योगदान महत्त्वपूर्ण है। इसी कारण राजेन्द्र यादव

ने कहा -- ''खुद तंगी और तकलीफ में रहकर औरों को सुविधा जुटाने में कमलेश्वर का बड़प्पन तृप्त होता है।.... क्या कम विरोधाभास है कि कमलेश्वर जिन्दगी के छोटे-छोटे झूठों के हथियार से युग के सबसे बड़े झूठ के खिलाफ लड़ रहा है।''[16] क्योंकि अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से कमलेश्वर के सर्जक को अमर हो जाना है।

कमलेश्वरजी ने 'नयी कहानी' के संपादन द्वारा अपनी नयी दृष्टि का खुलकर परिचय दिया था। अपने संपादन काल में कमलेश्वर ने जिन लेखकों को नई कहानी में लिया वे राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर अपनी रचनाधर्मिता में लगे थे। 'नयी कहानी' की भूमिका में कमलेश्वर का संपादकत्व विश्व प्रसिद्ध हुआ। बदली हुई परिस्थितियों से जो संकट और समस्याएँ देश- विदेश में उत्पन्न हुई उनका वैज्ञानिक चिन्तन अनेक लेखों द्वारा कमलेश्वर ने प्रस्तुत किया। उन्होंने बिखरे हुए लेखकों को एकत्रित करने का प्रयास किया। वे विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों को साहित्यिक चिन्तन तथा सृजन प्रक्रिया में सक्रिय सहयोग दे रहे थे। ''सम्पादक कमलेश्वर अपनी मेज़ पर बैठकर फतवेबाजी के लिए कलम ही नहीं घिसता वरन् साहित्यिक कार्य के लिए फील्ड वर्क भी करता है।... आम आदमी के लिए कुछ न कुछ करते रहने की छटपटाहट उनमें कभी भी देखी जा सकती थी।''[17]

सम्पादक कमलेश्वर के सम्बन्ध में अजित पुष्कल का कथन है - ''सम्पादक के रूप में भारतीय चिन्तन और सम्मिलित भारतीय साहित्य के स्वरूप को भाषाई सीमाओं में ऊपर ले जाकर एकात्मक करने का जो ऐतिहासिक दायित्व कमलेश्वर ने

निभाया है वह यथार्थवादी सोच और प्रगतिशील चिन्तन की परम्परा को ही अगली कड़ी है।''[18] असल में यह बिल्कुल सही है। कमलेश्वर सामयिक परिवर्तनशील चेतना को विकसित करने वाले सम्पादकों में अग्रणी हैं।

1.2.4 संस्मरण साहित्य और कमलेश्वर

हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं की भांति संस्मरण साहित्य का भी हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान है। यह अपने में पूर्ण एवं स्वतंत्र विधा है। कमलेश्वर का विशुद्ध संस्मरण ग्रंथ 'अपनी निगाह में' माना जाता है क्योंकि रचनाओं की विधा नामावली में इसे संस्मरण से संबोधित किया गया है। यों आत्मपरक संस्मरणों में 'यादों के चिराग', 'जो मैंने किया' तथा 'जलती हुई नदी' लोकप्रिय हुए हैं। कमलेश्वर के लिए उनके संस्मरण जीवनगाथा नहीं है। अनुभव के यथार्थ से गुजरते हुए एक लम्बे साहित्यिक दौर के ये कुछ पड़ाव हैं, जो उनके समय के सत्य को उनके लिए निर्मित और उद्‌घाटित करते हैं।

1.2.5 नाटककार कमलेश्वर

नाटक एवं नाट्य रूपांतर के क्षेत्र में भी कमलेश्वर ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। उन्होंने मौलिक एवं अनूदित नाटकों की रचना की है। उनके मौलिक नाटक है - 'अधूरी आवाज' तथा 'रेगिस्तान'। उनका अनूदित नाटक है- 'खड़िया का घेरा' जिसका मूललेखक ब्रेख्त है । 'चारुलता' रवीन्द्रनाथ ठाकूर के 'नष्ट नीड़' का नाट्य रूपांतर है। प्रेमचन्द के गोदान, गबन और निर्मला का नाट्य रूपांतर उन्होंने

किया है लेकिन ये अप्रकाशित एवं अप्राप्य है। बच्चों को वे नहीं भूले। उन्होंने बाल नाटकों के चार संग्रह लिखे हैं, लेकिन उनमें कुछ तो प्राप्त है और कुछ अप्राप्य। इस प्रकार नाटक साहित्य का भी कमलेश्वर ने अपना योग दिया है।

1.2.6 आलोचक कमलेश्वर

आलोचना का क्षेत्र सामान्यतः साहित्यकारों (कथाकारों) के पहुँच की दुनिया नहीं है। फिर भी कमलेश्वर ने वहाँ भी अपनी जीत की झण्डा फहराया है। उनकी आलोचनात्मक रचनाएँ हैं - 'नई कहानी की भूमिका', 'नई कहानी के बाद' और 'मेरा पन्ना : समान्तर सोच'। इसमें 'नई कहानी की भूमिका' ही श्रेष्ठ रचना है। इसमें कमलेश्वर ने स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक पहलुओं और संकल्पों को उजागर किया है, साथ ही कहानी सम्बन्धी अपनी मान्यता की सटीक अभिव्यक्ति भी दी है।

1.2.7 यायावरी कमलेश्वर

यायावरी विधा भी कमलेश्वर से अछूती नहीं है। केवल एक यात्रा विवरण से उन्होंने यायावरी साहित्य विधा को सम्पन्न बनाया। उनका यात्रा विवरण है - 'खंडित यात्राएँ'।

1.2.8 आत्मकथाकार कमलेश्वर

हिन्दी साहित्य की नवीन गद्य विधाओं में आत्मकथा का प्रमुख स्थान बताया जा रहा है। आत्मकथा में लेखक एक रूप न लेकर अनेक रूपों में आगे बढ़ता है। आत्मकथाएँ लेखक की अपनी कथा होती है। अतः स्वयं लेखक ही आत्मकथा का

नायक होता है। रचनाकार समाज का सच्चा पर्यवेक्षक एवं व्याख्याकार होता है अतः कमलेश्वर ने भारतीय समाज को किस दृष्टि से देखा है और अपनी स्मृतियों में किस प्रकार प्रस्तुत किया है उसका तथ्यात्मक विवरण हमें उनके आत्मकथात्मक लेखन द्वारा मिलते हैं।

कमलेश्वर ने जहाँ एक ओर अपने जीवन की समग्र झांकियाँ प्रस्तुत की है वहीं कुछ विशिष्ट घटनाओं का आकर्षक वर्णन भी किया है, जीवन का क्रमगत विवरण आत्मकथा की विषयवस्तु है। उनकी प्रमुख आत्मकथात्मक संस्मरण है- 'जो मैं ने जिया', 'यादों के चिराग', 'जलती हुई नदी'। कमलेश्वर ने अपने आत्मकथात्मक संस्मरणों में यथार्थ जीवन को महत्व दिया है। वे इस लोक की ही बात करते हैं, किसी काल्पनिक संसार में वे विश्वास नहीं रखते।

ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों, महत्वपूर्ण स्थलों तथा प्रोत्साहनयुक्त घटनाओं को अपने संस्मरणों में प्रस्तुत करके कमलेश्वर ने आम पाठक को उनसे परिचय कराया है। अपने दुर्दिनों में उन्हें पिता भी याद आए तो भाई भी। माँ का स्थिति सामने थी। अपने परिवार और अपने संघर्षमय स्थितियों का यथार्थ लेखा-जोखा उनके आत्मकथात्मक संस्मरणों में देखने को मिलता है।

1.2.9 आकाशवाणी और कमलेश्वर

कमलेश्वर ने ऑल इण्डिया रेड़ियो इलाहाबाद में स्क्रिप्ट राइटर के रूप में कार्य किया था। उनकी प्रतिभा विलक्षण थी। अपने छोटे कार्यकाल में उन्होंने अपना

अभूतपुर्व सहयोग दिया। वे अपनी वाणी में पारंगत रहे तथा आम आदमी के बीच में उठकर ऊपर आए। उनको परिस्थिति ने प्रभावित नहीं किया बल्कि वे परिस्थितियों की शक्लें बदलने में सफल हुए। दृष्टि की विशालता, विचारों की गहनता तथा अनुभवों की गंभीरता ने उनको विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान किया। इसी विशिष्ट व्यक्तित्व ने उन्हें रेडियो स्क्रिप्ट राइटिंग की एक पृथक व उत्कृष्ट शैली प्रदान की। अपनी सहजता, वाक्पटुता, गंभीरता, परिपक्वता के लिए कमलेश्वर विख्यात है। रेडियो से अलग हो जाने के बाद भी वे परामर्श देते रहे।

1.2.10 दूरदर्शन और कमलेश्वर

कमलेश्वर के व्यक्तित्व का एक पहलू दूरदर्शन के माध्यम से मुखर होता है। वे केवल एक कलाकार ही नहीं बल्कि एक बहुत उच्चकोटि के दूरदर्शन के कलाकार भी रहे। सन् 1958 में कमलेश्वर दूरदर्शन में नियुक्त हो गए। फिर एक महीने बाद दूरदर्शन केन्द्र दिल्ली में तबादला कर दिया गया। दूरदर्शन उन्हीं दिनों शुरु हुआ था। उस समय दूरदर्शन में केवल कमलेश्वर ही हिन्दी लिखने वाले थे बाकी सब केवल बोल सकते थे। वे दूरदर्शन में तरह-तरह की स्क्रिप्ट्स लिखते तथा विविध कार्यक्रम पेश करते रहे। 'परिक्रमा' कार्यक्रम, साहित्यिक सीरियल 'दर्पण', 'लोकमंच', 'दूरदर्शन क्लब' जैसे रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। कमलेश्वर के धारावाहिक आम ज़िन्दगी की सच्चाईयाँ रही हैं अतः वे स्वयं में समसमायिक यथार्थ के साथ प्रस्तुत होते गए।

कमलेश्वर एक मशहूर टी.वी. स्टार भी है। मुंबई दूरदर्शन से प्रसारित परिक्रमा कार्यक्रम के संचालक कमलेश्वर रहे। 'परिक्रमा' इन्टरव्यूओं का कार्यक्रम होने पर भी उस समय मुंम्बई दूरदर्शन के सबसे लोकप्रिय एवं सफल कार्यक्रमों से एक बन गई। मुंम्बई की पत्रिका 'अवोनेयर' ने कमलेश्वर को सन् 1975 के सर्वश्रेष्ठ टी.वी. व्यक्तित्व के रूप में चुना भी है। 'परिक्रमा' कार्यक्रम के सम्बन्ध में प्रसिद्ध अंग्रेज़ी कवि और विचारक निसीम इजीकेल ने लिखा है ''कमलेश्वर के कार्यक्रम (परिक्रमा) भारतीय टेलिविजन की उपलब्धि है। वे कार्यक्रम है ही नहीं, घटनाएँ है। अब बार बार कमलेश्वर के कार्यक्रमों के बारे में लिखने और कहने को कुछ शेष नहीं रह गया है।''[19]

टी.वी. स्टार कमलेश्वर की एक और विशेषता है वह एक खूबसूरत नौजवान आदमी है जो मामूली बुशर्ट और पेंट में दिखाई देता है। लगता है किसी दफ्तर से कोई बाबू उठकर चला आया है। ''कमलेश्वर एक सामाजिक और सोशलिस्ट विचारवाला लेखक है जिसका आर्ट टी.वी. के माध्यम से बारह लाख टी.वी. दर्शकों तक हर हफ्ते पहुँचता है।''[20] यह कमलेश्वर के रचनाकार, निर्माता और निर्देशक की विशेषता रही है कि उसका कोई भी सीरियल असफल नहीं हुआ।

1.2.11 फिल्मी दुनिया और कमलेश्वर

हिन्दी फिल्मों से सम्बद्ध साहित्यकारों में सबसे प्रबल एवं ख्याति प्राप्त साहित्यकार है कमलेश्वर। कमलेश्वर ने ही साहित्यकार को फिल्मी जगत में एक

सर्वथा नया मूल्य एवं प्रतिष्ठा दी। सिनेमा को मात्र मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाकर अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने का साहस कमलेश्वर ने ही किया। कमलेश्वर के मित्र एवं समकालीन मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी आदि लेखक-लेखिकाओं ने भी उन्हें सहयोग दिया। कमलेश्वर की कहानियों ने फिल्म रूप में फिल्म व्यवसाय को कथ्य का महत्व दिया है। हिन्दी फिल्मों में लेखक 'मुंशी' का पर्याय रहा था। इस प्रकार हिन्दी फिल्मों में कमलेश्वर एक अपरिहार्य नाम और एक निश्चित शक्ति थे।

कमलेश्वर ने कहानी क्षेत्र में 'नई कहानी' का जो आन्दोलन चलाया था उसी तरह का एक आन्दोलन का सूत्रपात सिनेमा जगत में भी किया। उसका नाम था 'समांतर सिनेमा' । जिन्होंने नई कहानी आन्दोलन में कमलेश्वर के साथ भाग लिया था वे ही इस आन्दोलन में सहभागी रहे। कमलेश्वर और उनके समकालीनों की रचनाओं का निर्देशक एवं निर्माता नई दृष्टि से पढ़ने और परखने लगे। निर्देशक एवं निर्माता, कमलेश्वर से पटकथा लिखवाने तथा उनकी रचनाओं पर फिल्म बनाने के लिए आतुर थे। गुलजार ने 'काली आँधी' और 'आगामी अतीत' उपन्यासों पर 'आँधी' और 'मौसम' नामक दो फिल्में बनायी।

राजेन्द्र यादव के 'सारा आकाश' की पटकथा और संवाद खुद कमलेश्वर ने ही लिखा था। वे खुद पटकथा एवं संवाद लिखते थे तथा दूसरों की कहानी उपन्यासों पर पटकथा एवं संवाद भी लिखा करते थे। 'अमानुष' का संवाद स्वयं कमलेश्वर ने ही लिखा। कमलेश्वर की सबसे बड़ा ताकत उनकी 'ओरिजनेलिटी' एवं ताजगी है। उन्हें

अपने वक्त और अपनी जनता की जानकारी है। इसलिए उस पर वार करने की हिम्मत किसी में नहीं है। इसलिए ही कमलेश्वर के पास फिल्में लिखवाने वालों का लम्बा 'क्यू' बना रहता था। फिल्म इंडस्ट्री के एक सज्जन ने कमलेश्वर के बारे में कहा है - ''हिन्दी से जो कमलेश्वर नाम का लेखक मिला है - वह अपनी जनता को प्यार करता है और उस जनता को अहंकार से नहीं, प्यार से अपनी बात समझाना चाहता है - यहाँ पर फिल्म उसके कन्धों से कन्धा मिलाकर खड़ी हो जाती है, कमलेश्वर हिन्दी फिल्मों की ताकत बन जाता है।''[21]

फिल्मी जगत को कमलेश्वर ने निम्नलिखित संभावनाएँ दी हैं-

बदनाम बस्ती - 'एक सड़क सत्तावन गालियाँ' उपन्यास पर आधारित

फिर भी - 'तलाश' कहानी पर आधारित

अमानुष - संवाद लेखन

आँधी - 'काली आँधी' उपन्यास पर आधारित

घड़ी के दो हाथ- पटकथा और संवाद लेखन

आनन्द आश्रम - संवाद लेखन

तुम्हारी कसम - पटकखा और संवाद लेखन

वही बात - कहानी, पटकथा और संवाद लेखन

मृगतृष्णा - संवाद लेखन

राम-बलराम - पटकथा एवं संवाद लेखन

वे किसी के कथाकार हैं, किसी के पटकथा लेखक हैं तो किसी के संवाद लिखने में व्यस्त हैं। वे सदा सही फिल्मों की तलाश में लीन है। उनकी संप्रेषणशीलता, विद्वत्ता, तर्कशक्ति आदि में इतनी विशिष्टता है कि फिल्म साहित्य को ही नहीं हिन्दी फिल्मों को भी एक मर्यादा मिली हैं।

1.3 प्राप्त पुरस्कार

कमलेश्वर को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए निम्नलिखित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं- साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत सरकार का पद्मभूषण, दिल्ली हिंदी अकादमी का शलाका सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का भारत-भारती, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद का आचार्य शिवपूजन सहाय शिखर सम्मान, हिमाचल प्रदेश का शिखर सम्मान, उत्तर प्रदेश सरकार का यशभारती (मरणोपरांत).... आदि।

1.4 लेखकीय व्यक्तित्व

प्रत्येक रचनाधर्मी कलाकार अपने भीतर दो व्यक्तित्व के मध्य जीवित रहता है। बल्कि यूँ कहें कि एक ही व्यक्तित्व के दो स्तरों के मध्य उसकी सृजनयात्रा विकसित होती है। एक स्तर वह है, जहाँ उसकी संवेदनशीलता व्यावहारिक जीवनमूल्यों से नियन्त्रित होती हुई कृति में रूपान्तरित होती है। दूसरा स्तर वह है, जहाँ उसकी

संवेदनाएँ व्यावहारिक जीवनमूल्यों से परे एक कलाधर्मी, अनासक्त एवं निर्लिप्त व्यक्तित्व को उभारती है। कमलेश्वर का लेखकीय व्यक्तित्व एक ऐसे व्यक्ति का साक्षात्कार कराता हैं, जो परिवेशगत बदलाव के कारण परिवर्तित होती मनःस्थितियों के बीच अपने स्रोतों से कटकर, आर्थिक मोर्चों और वजूद की सार्थकता के सवालों का सामना करते हुए भयावह दमनचक्र के सम्मुख लाचार मुद्रा में खड़ा है। अपनी प्रारंभिक कहानियों और उपन्यासों में कमलेश्वर के लेखकीय व्यक्तित्व का एक आयाम पारम्परिक श्रद्धामूल्यों तथा आधुनिकता की उपलब्धियाँ और अभिशापों के स्वीकार में उद्‌घाटित हुआ है। कस्बाई-संस्कृति में विकसित सहज आत्मीयता इन पर आधारित निष्कपट मानवीय संबन्धों का ही उनके निकट महत्व है। उनकी संवेदनशीलता अपनी प्रारंभिक कहानियों में मानवीय संबन्धों को रूपायित करती है। डॉ. अमरप्रसाद जायसवाल का कथन है- ''कस्बों तथा महानगरों में रहनेवाला मध्य एवं निम्न वर्ग उनकी रचनाओं का प्रतिपाद्य है।''[22]

कमलेश्वर अपने रचनाओं के द्वारा आधुनिकता से जन्मे परिवर्तन का संकेत करते हुए पारम्परिकता के छूट जाने से जन्मे दर्द को जुबान देता है। 'मुरदों की दुनियाँ', 'गर्मियों के दिन', 'खोई हुई दिशाएँ' आदि कहानियाँ इसका प्रमाण है। इसके बाद की कहानियों में महानगरीय जीवन में व्यक्ति की परिणति को उद्‌घाटित करते हैं। परिवर्तन की प्रक्रिया में यंत्रकेन्द्रित संस्कृति विकसित हुई है और महानगर का यांत्रिक जीवन व्यक्ति के लिए अभिशाप बन गया है। 'अजनबी', 'मैं' और 'दूसरी सुबह सूरज पश्चिम में निकला' कहानियाँ इसी बात को व्यक्त करती है। कमलेश्वर ने कुछ

मनोवैज्ञानिक कहानियाँ भी लिखी है। उनकी 'आसक्ति', 'तलाश', 'या कुछ और' तथा 'अपना एकान्त' कहानी व्यक्ति मन के अंतर्यथार्थ को उद्‌घाटित करने वाली कहानियाँ हैं।

कमलेश्वर के कलाकार व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जहाँ राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक चेतनाओं के मध्य आधुनिक व्यक्ति की जीवन-संघर्ष यात्रा को तलाशा गया है। 'बयान', 'जोखिम' और 'इतने अच्छे दिन' में लेखकीय संवेदना अरागात्मक स्तर पर भयावह सच्चाइयों को जुबान देती है। इन कहानियों में राजनीति और समाज दोनों के संदर्भ मिलते हैं। लेखक का अनुभूति क्षेत्र यथार्थ के नग्न रूप पर केन्द्रित है। आर्थिक संकट के सम्मुख नैतिक मूल्य और मानवीय मूल्य दोनों ही अपने अर्थ और महत्व को खो चुके हैं यह तथ्य उनकी कहानियों में देखने को मिलता है।

कमलेश्वर के उपन्यासों में भी उनका लेखकीय व्यक्तित्व का स्वरूप देखने को मिलता है। 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' के माध्यम से लेखक ने निम्नवर्गीय समाज के सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक जीवन का यथार्थ चित्रण प्रभावी ढंग से किया है। आधुनिक ज़माने में विवाह एक समझौता या मैत्री संबन्ध के रूप में स्वीकार किया जा रहा है, इसका चित्रण 'ड़ाक बंगला' नामक उपन्यास में किया है। 'कितने पाकिस्तान' उनके लेखकीय व्यक्तित्व का चरमोत्कर्ष भाव देखने को मिलता है।

कमलेश्वर की संवेदनशीलता अपनी कथायात्रा के प्रारंभ में व्यावहारिक जीवन मूल्यों से नियंत्रित है। लेकिन क्रमशः इनका कलाकार स्वयं को इन नियंत्रण से मुक्त करता हुआ एक कलाधर्मी और अनासक्त व्यक्तित्व प्राप्त करने में सफल हुआ है। परिणामस्वरूप यह कलाकार व्यक्तित्व संवेदनशील मानस का प्रतिनिधि हो सकता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक मोर्चों पर लड़ता हुआ यह संवेदनशील व्यक्ति एक बेहतर जीवन प्राप्त करने की कामना करते हुए एक निश्चित वैचारिक भूमिका प्रदान करता है।

निष्कर्ष

समग्रतः विचार कहने पर यह स्पष्ट होगा कि हिन्दी कथा साहित्य जगत में नई कहानी के प्रमुख वक्ता के रूप में कमलेश्वर का पदार्पण हुआ था। शिलाखण्ड को तराशनेवाले मूर्तिकार की वास्तुकारिता का उन्मेष उनके कथा साहित्य में मिलता है। कमलेश्वर की ख्याति का मुख्य आधार उनकी कहानियाँ ही हैं। उन्होंने मध्यवर्ग को अपनी रचना का विषय बनाया। एक प्रगतिशील कथाकार होने के कारण उनमें जीवन से प्रतिबद्धता एवं शाश्वत मूल्यों के विद्रोह का आग्रह विद्यमान है। उन्होंने समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं को उसके यथार्थ-धरातल पर अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। वस्तुतः साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने अपनी कलम चलाई, लेकिन एक अत्याधिक सफल कहानीकार या उपन्यासकार के रूप में कमलेश्वर प्रसिद्ध हुए हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ. घनश्याम मधुप, हिन्दी लघु उपन्यास, पृ. 163

2. सं. मधुकर सिंह, कमलेश्वर (आइने के सामने कमलेश्वर), पृ. 77

3. वही, पृ. 8

4. कमलेश्वर, जो मैंने जिया, पृ. 14

5. मधुकर सिंह, कमलेश्वर (कमलेश्वर, दुष्यन्तकुमार की निगाह में- लेख से), पृ. 88

6. कमलेश्वर, यादों के चिराग, पृ. 16

7. डॉ.उषा चौहान, नयी कहानी के कहानीकारों की आलोचनात्मक दृष्टि, पृ. 141

8. कमलेश्वर, मेरी प्रिय कहानियाँ (भूमिका), पृ. 5

9. कमलेश्वर, माँस का दरिया, पृ. 11

10.राजेन्द्र यादव, औरों के बहाने, पृ. 57

11. कमलेश्वर, नई कहानी की भूमिका, पृ. 29

12. मधुकर सिंह, कमलेश्वर (डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना-कमलेश्वर की औपन्यासिक यात्रा लेख से), पृ. 193

13. विवेकी राय, समकालीन हिन्दी उपन्यास, पृ. 145

14. विवेकी राय, आधुनिक उपन्यास, पृ. 114

15. मधुकर सिंह, कमलेश्वर, पृ. 340

16. राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर मेरा हमदम मेरा दोस्त, पृ. 23

17. अजित पुष्कल, कमलेश्वर, पृ. 329

18. अजित पुष्कल, कमलेश्वर व्यक्ति तथा कृतिकार, पृ. 61

19. मधुकर सिंह, कमलेश्वर (टेलिविजन और कमलेश्वर), पृ. 305

20. मधुकर सिंह, कमलेश्वर, पृ. 32

21. मधुकर सिंह, कमलेश्वर हिन्दी फिल्मों की ताकत- अनाम, पृ. 351

22. डॉ. अमरप्रसाद जायसवाल, हिन्दी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार, पृ. 372